रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

आवश्यक सूचना

समस्त इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को सूचित किया जाता है कि वे अपना ई–मेल आई0डी0 व माबाईल नं0 कार्यालय को प्रेषित करें ताकि उन्हें नवीन्तम सूचनाये E-mail अथवा S.M.S. के माध्यम से भेजी जा सके। रजिस्ट्रार

registrarbehmup@gmail.com

पत्र व्यवहार हेतु पता :– ,
सम्पादक, इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट, 127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –24 ● कानपुर 16 से 31 दिसम्बर 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

अधिवक्ता जीवन प्रकाश शर्मा अब नहीं रहे

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रबल समर्थक व इलाहाबाद उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता स्व0 जीवन प्रकाश शर्मा के असामायिक निधन की ख़बर जैसे ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत को लगी तो एक पल तो इस समाचार पर भरोसा ही नहीं हुआ कि इतना हंसमुख और मिलनसार व्यक्ति इतनी जल्दी हम सब को छोड़कर चला जायेगा, परन्तु नियति को यही मंजूर था और 27 नवम्बर, 2017 को श्री जीवन प्रकाश शर्मा के निधन की ख़बर हमें स्वीकारनी ही पड़ी, उनका यूँ अनायास जाना एक पल तो गले के नीचे नहीं उतरता परन्तु जो सत्य होता है उसे स्वीकारना ही पड़ता है। श्री जीवन प्रकाश शर्मा का मुस्कराता हुआ चेहरा हमें आज भी याद है कितनी भी प्रतिकूल परिस्थिति हो श्री शर्मा न तो स्वयं विचलित हुए और न ही सामने वाले को विचलित होने दिया, श्री जीवन प्रकाश शर्मा का इलेक्ट्रो होम्योपैथी से बहुत गहरा सम्बन्ध था। श्री शर्मा न केवल बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के विधिक सलाहकार थे अपितु वह हमारे संरक्षक और सदैव प्रेरणा देने वाले व्यक्ति थे जब–जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर कोई सरकारी शिकंजा कसा तब श्री शर्मा एक अडिग चट्टान की तरह सामने खड़े रहे यही कारण था न केवल बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के वह सलाहकार थे अपितु देश और प्रदेश में चलने वाली विभिन्न इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्थाओं के संचालकों से भी उनके अच्छे सम्बन्ध थे। हर आने वाले व्यक्ति का वह सम्मान करते थे और उसकी समस्या को गम्भीरता से सुनते हुए उसके निराकरण की कोई ने कोई राह निकालते थे। श्री जीवन प्रकाश शर्मा के निधन से बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 परिवार हृदय से दुःखी है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की क्षमता प्रभु प्रदान करे।

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 और इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया ने संयुक्त रूप से श्री जीवन प्रकाश शर्मा के निधन पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर बोर्ड के चेयरमैन डा0 एम0एच0 इदरीसी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री शर्मा का अनायास इस तरह से चले जाना एक अपूर्णीय क्षति है। यह क्षति मेरी व्यक्तिगत तो है ही साथ–साथ पूरे इलेक्ट्रो होम्यो पैथी जगत के लिए क्षति है, इसकी भरपायी होना बहुत मुश्किल है डा0 इदरीसी ने बताया कि वर्ष 2001 में एक मुकदमें के सिलसिले में मेरी उनसे पहली मुलाक़ात हुई पहली ही मुलाक़ात में उनकी बातों ने मुझपर जो प्रभाव डाला वह आज त क मु झे प्रभावित कर रहा है। इन 16 वर्षों में मेरी उनसे काफ़ी अन्तरंगता बढ़ गयी थी, अन्तरंगता तो इतनी थी कि न केवल इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर अपितु कभी–कभी सामाजिक और पारिवारिक बातों पर भी चर्चा होती थी, उनका दृष्टिकोण बहुत दूरदर्शी व सकारात्मक था, वह इस बात को मानते थे कि जो पद्धति वर्षों से अस्तित्व में है उसका नियमितीकरण होना ही चाहिये, सरकारी अफसरों और उनकी कार्यशैली पर वह अक्सर कहते थे कि इनको अपना नज़रिया बदलना ही पड़ेगा।

डा0 इदरीसी ने पुरानी याद करते हुए बताया कि जब उत्तर प्रदेश सरकार ने सभी चिकित्सकों का पंजीकरण मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में अनिवार्य किया उस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के साथ अधिकारियों द्वारा दोहरा मापदण्ड अपनाया जाने लगा जबकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को अधिकारपूर्वक कार्य करने के लिए 4 जनवरी, 2012 को उत्तर प्रदेश शासन के चिकित्सा अनुभाग–6 द्वारा आदेश जारी कर दिया गया था परन्तु अधिकारी– गण अपनी मनमानी पर उतारू थे और कहीं – कहीं इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों का उत्पीड़न भी कर रहे थे। जब यह बात श्री जीवन प्रकाश शर्मा तक पहुंची और उनसे कहा गया कि मुकदमा कीजिए तब जीवन प्रकाश शर्मा ने मुस्कारते हुए कहा कि इदरीसी साहब आप तो समझदार आदमी हैं आपने पंजीयन का प्रारूप और उसपर 21 जून, 2011 व 4 जनवरी, 2012 के आदेश भी छाप रखे हैं आप इसी प्रपत्र पर मेरा नाम और बोर्ड से मेरी सम्बद्धता भी छाप दीजिए, उनका यह सुझाव आज भी हमें प्रभावित करता है।

- ज़रुरतमंदों के थे मसीहा
- कानून पर थी मज़बूत पकड़
- इलेक्ट्रो होम्योपैथी के समर्थक
- हर स्थिति में देते थे साथ
- आयुर्वेद से भी था बहुत प्रेम

भाव पूर्ण – श्रद्धान्जलि

9 मई, 1967 – 27 नवम्बर, 2017

श्री शर्मा प्रायः यह कहा करते थे कि जहां तक हो सके मुकदमों से बचो और इसे संयोग ही कहा जायेगा कि बोर्ड ने श्री शर्मा को मुकदमें तो कई दिये परन्तु लड़े एक भी नहीं गये, खैर अब शर्मा जी हमारे बीच नहीं हैं उनकी यादें हमें संजो कर रखनी है, इस अवसर पर हमारी श्रद्धांजलि।

कार्यक्रम में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डा0 प्रमोद शंकार बाजपेयी, महासचिव इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया ने कहा कि श्री शर्मा को श्रद्धांजलि देने के लिए मैं शब्द नहीं संजोय पा रहा हूँ उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए जो किया वह अविस्मरणीय है, वह न केवल वरिष्ठ अधिवक्ता थे अपितु एक सहृदय व्यक्तित्व के धनी भी थे, धन की लोलुपता उनको नहीं थी, डा0 इदरीसी के साथ मुझे कई बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हर बार एक नये अवतार में वह नज़र आये। आयुर्वेद के प्रति उनका झुकाव और आकर्षण वस्तुतः बहुत अच्छा था, इलाहाबाद हाईकोर्ट के साथ–साथ सुप्रीमकोर्ट में भी उनकी एक अलग छवि थी, इस अपूर्णीय क्षति का पूरा होना सम्भव नहीं है, हम और हमारे चिकित्सकों के बीच श्री शर्मा सदैव प्रेरक की भाँति उपस्थित रहेंगे।

श्रद्धांजलि सभा में अपनी श्रद्धांजलि देते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया के संयुक्त सचिव श्री मिथलेश कुमार मिश्रा ने बताया कि 9 मई, 1967 को बनारस में जन्मे श्री शर्मा 50 वर्ष की अल्प आयु में ही हम सबको छोड़कर चले जायेंगे यह किसी ने कल्पना भी नहीं की थी, मेरी उनसे कई मुलाकातें हैं उनका चमकता हुआ चेहरा व विश्वास भरा मस्तिष्क सदैव हमारी यादों में रहेगा, वह हमारे बीच नहीं हैं यह हमें स्वीकारना होगा परन्तु उनकी यादें और उनका प्रेरक व्यक्तित्व सदैव हमें दिशा देता रहेगा।

इस विशेष आयोजन पर बोर्ड की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती शाहीना इदरीसी ने भी श्री शर्मा से अपनी मुलाकात के संस्मरण सुनाये।

समय की उपयोगिता

समय का अपना अलग स्थान होता है और अपनी अलग महत्ता, समय के साथ चलते रहने में सफ़लता की अपेक्षा की जा सकती है और यदि समय रहते समय से काम न किये गये तो यही समय हमें बहुत पीछे छोड़ देता है इसलिए समय की उपयोगिता को कभी भी गौण नहीं करना चाहिये क्योंकि यदि समय निकल गया तो पछतावे के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं आता।

हर व्यक्ति के जीवन में समय का अपना एक अलग स्थान होता है और यह समय ही है जो व्यक्ति को उठाता और गिराता है, देखा जाये तो जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां समय अपनी उपयोगिता सिद्ध नहीं करता है, अब यह व्यक्ति के हाथ में होता है कि वह समय को किस तरह से अपने लिए उपयोगी बनाता है, जहां तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बात है यहां पर समय समय पर जो भी घटनायें घटी हैं उन सब में कहीं न कहीं समय का दख़ल अवश्य रहा है, उद्भव काल से लेकर आज तक जिन भी परिस्थितियों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी गुज़री है हर परिस्थिति के निर्माण में समय का अपना प्रभाव रहा है। यद्यपि यह भी सत्य है कि समय का प्रभाव हर व्यक्ति के जीवन में अपने– अपने ढंग से पड़ता है, जो समय को समझ लेता है और समय के अनुरूप कार्य करता है वह परिस्थितियों को अपने अनुरूप ढालने में सक्षम होता है।

आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी का समय बहुत अच्छा चल रहा है और यही वह समय है जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े सभी जन एकजुट व एक मत होकर सिर्फ़ और सिर्फ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य करें तभी इस अच्छे चलते हुए समय को अच्छाई में परिवर्तित किया जा सकता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी की विडम्बना है कि समय चाहे जितना बीत जाये पर मत भिन्नता खत्म होने का नाम ही नहीं लेती है, वैसे हम इसे स्वीकार करते हैं कि जहाँ पर सभी बुद्धिमान होते हैं वहां पर साधारणतयः एक मत होने में बहुत समय लग जाता है और कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि जब तक समय आता है तब तक बहुत विलम्ब हो चुका होता है क्योंकि समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है व्यक्ति ही समय की प्रतीक्षा करता है, कब समय आया और कब समय निकल गया हम इसी गणित में लगे रहते हैं अच्छा समय हाथ से निकल जाता है, समय की ही बात है कि वर्ष 2016 के अन्तिम महीनों में भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितीकरण के लिए एक इन्टर डिपार्टमेन्टल कमेटी का गठन किया और 28 फरवरी, 2017 को इस कमेटी के गठन होने और कमेटी के कार्यों की सूचना भारत सरकार द्वारा प्रसारित की गयी जब हमारे साथियों ने इस कमेटी के कार्यों के बारे में पढ़ा, सोचा – समझा और जाना तब तक काफ़ी समय निकल चुका था कुछ लोग जो समय से भी तेज़ चलते हैं वह अपनी आदत के अनुसार तेज़ चले और जिस गति को प्राप्त हुए वह भी सभी को ज्ञात है ! शायद उन्हें समय की चाल का अभास नहीं था तभी तो समय से तेज़ चलने की गलती कर बैठे।

जब हम सब को प्रपोज़ल देने के समय के बारे में पता चला तो कुछ लोगों ने कहा कि बहुत लम्बा समय दे दिया गया है और सही मायने में 10 महीने का समय प्रपोज़लों को भेजने के लिए काफ़ी नहीं बहुत काफ़ी था परन्तु देखते ही देखते इन 10 महीनों का समय कैसे हाथों से फिसल गया किसी को समझ में ही नहीं आया। यह तो समय की महिमा है कि जो इसको समझा उसका बेड़ा पार ! जो नहीं समझा वह डूबा मझधार !! धीरे–धीरे 10 महीने की लम्बी समय की अवधि अब समापन के अपने आखिरी पायदान पर है अभी भी कुछ लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं कि शायद और समय आगे मिले, अब और कितना समय चाहिये ! धीरे–धीरे समय की उम्र बढ़ रही है और मन यही कहता है कि समय पर कोई काम हो जाये तो अच्छा रहता है समय पर हुए कार्य की अपनी अलग महत्ता होती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में सरकार को जो भी निर्णय लेना है वह ले ले क्योंकि प्रतीक्षा करते–करते काफ़ी समय बीत चुका है, 80–90 के दशक में जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी का स्वर्णिम काल कहलाता है उस समय जो लोग इस चिकित्सा पद्धति से जुड़े, वैसे तो इतने लम्बी प्रतीक्षा के बाद उनकी आशायें धुंधला चुकी हैं और जो सपने उनके आखों ने पाले थे शनै शनै वह सपने भी धुंधलाते जा रहे हैं अब तो सब यही प्रतीक्षा कर रहे हैं कि जो समय भारत सरकार ने निर्धारित किया था उस समय सीमा के पूरा होने के बाद तत्काल सरकार कोई ऐसा निर्णय ले जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी और इस चिकित्सा पद्धति से जुड़े लोगों के सपने पूरे हो सकें।

कहीं दंश तो कहीं दम्भ

एक ही क्षेत्र में जब बहुत सारे लोग कार्य करते हैं तब उससे जुड़ा हुआ हर व्यक्ति यह दिखाना चाहता है कि उसका अपना महत्व है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी का क्षेत्र बहुत बड़ा है और पिछले 30 वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जितना विकास हुआ है उतना विकास शायद गुज़रे 120 वर्षों में नहीं हुआ था, इन वर्षों में शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने बड़ी लम्बी छलांग लगायी है सन् 1980 के पहले तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा और चिकित्सा में वह गति नहीं थी जो आज दिखायी देती है पहले गुरू–शिष्य परम्परा के आधार पर शिक्षण व्यवस्था थी और जो छात्र इस विधा का अध्ययन करते थे वह चिकित्सा व्यवसाय के लिये नहीं अपितु ज्ञानार्जन के लिए करते थे।

सन् 1980 के दशक में अधिकांश वह लोग ही इस चिकित्सा पद्धति का ज्ञान लेते थे जिनके मन में यह भाव रहता था कि चलो घर की छोटी मोटी बीमारियों का घर बैठे इलाज कर लेंगे और कुछ समाज सेवा भी कर लेंगे, कुछ लोगों का विचार होता था कि आज इस चिकित्सा पद्धति में आसानी से प्रवेश मिल रहा है जब कभी इसको शासकीय मान्यता मिल जायेगी तब हम भी चिकित्सक बन जायेंगे पर अधिकांश संख्या ऐसे व्यक्तियों की होती थी जो कहीं न कहीं व्यवसाय या नौकरी पेशे में लगे होते थे, वे सोचते थे कि जब रिटायर होंगे तब प्रैक्टिस करेंगे, परिवर्तन आया इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ ऐसे लोगों का प्रवेश हुआ जिन्होंने इस पद्धति की महत्ता को समझा और उनके मन में यह विचार आया कि क्यों न इस चिकित्सा पद्धति का प्रसार किया जाये। प्रसार के लिए शिक्षण व्यवस्था का मज़बूत होना बहुत आवश्यक है अस्तु विद्यालयीय शिक्षा व्यवस्था को जन्म दिया गया। लोगों को यह व्यवस्था पसन्द आयी और केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारत में देखते ही देखते विद्यालयीय व्यवस्था प्रारम्भ हो गयी और यह अंशकालीन पाठ्यक्रम लोगों को इतना भाया कि लोगों ने इसे हाथों–हाथ लिया, जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास होने में ज़्यादा देर नहीं लगी, इस बार यह परिवर्तन था कि इस पद्धति में नवजवान बच्चे भी प्रवेश ले रहे थे जो चिकित्सा व्यवसाय में अपना कैरियर बनाना चाहते थे, इसका परिणाम यह हुआ कि हज़ारों की संख्या में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक चिकित्सा व्यवसाय के क्षेत्र में उतरे जिससे कि समाज को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में जानकारी हुई।

जब लोग ज़्यादा जुड़ते हैं तो लोगों में अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूकता बढ़ती है और यहीं से प्रारम्भ हुआ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन का नया युग ! जो लोग इससे जुड़े वे इस प्रयास में रहे कि किसी भी तरह से इस चिकित्सा पद्धति को भी वही स्थान मिले जो अन्य पद्धतियों को प्राप्त है, इसके लिए धरने, प्रदर्शन, आन्दोलन गोष्ठियां व सम्मेलन अर्थात जितने भी ऐसे कार्य थे जिससे कि सरकार पर दबाव पड़ता वह किये गये।

जनता के बीच पैठ बनाने के लिए निःशुल्क चिकित्सा शिविरों के आयोजन के साथ साथ स्थायी चिकित्सालयों की स्थापना भी की गयी, इन सारे कार्यों का प्रभाव यह हुआ कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बढ़ती लोकप्रियता को स्वीकार कर नही पा रही थी इसलिए कई ऐसे शासनादेश भी जारी हुए जो कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रतिरोध करते थे परन्तु जहां चाह–वहां राह की कहावत को चरितार्थ करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लोग अपने काम में डटे रहे, जब चिकित्सकों की संख्या बढ़ी तो औषधियों की आवश्यकता भी बढ़ी, उस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों के विपणन का काम चन्द हाथों में ही था, चिकित्सकों को आसानी से औषधियां उपलब्ध नहीं होती थी मांग और पूर्ति में असमानता होने के कारण कुछ लोग इसका अनावश्यक लाभ उठाते थे परन्तु जब मांग बढ़ी तो कुछ नई कम्पनियां और नये औषधि निर्माता इस क्षेत्र में कूदे जिन्होंने पारम्परिक औषधियों के साथ–साथ कुछ पेटेंट आइटम भी बनाने शुरू किये जिसका परिणाम यह हुआ कि औषधियों की गुणवत्ता बढ़ी और सबसे अच्छी बात यह हुई कि चिकित्सकों को औषधियां सुलभ हो गयीं।

एक समय था जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साहित्य की काफ़ी कमी थी, जो साहित्य था वह मैटी द्वारा या कुछ विदेशी साहित्यकारों द्वारा सृजित किया गया था भारतीय साहित्य में मात्र डा0 एन0 एल0 सिन्हा का नाम ही लिया जाता था।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी पत्र के माध्यम से भारत सरकार को सूचित किया था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की एक पुस्तिका देखी गयी है परन्तु सन् 1991 में जब 25 किताबों का एक सेट विश्व स्वास्थ्य संगठन को प्रेषित किया गया तो वह स्तब्ध रह गया। आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी का साहित्य काफ़ी समृद्ध है बहुत सारे नये लेखकों की पुस्तकें

शेष पेज 3 पर

डा0 नन्द लाल सिन्हा जी के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, डा0 एम0 एच0 इदरीसी – चेयरमैन बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 अपने संस्मरण सुनाते हुये – छाया गज़ट

ELECTRO HOMOEPATHY

It is an undenying fact that Electro Homoepathy is a new system of treatment for multibarious diseases, its efficacy, superiority and gleanings about cure have been extalled by so many Physicians of India and abroad. It may be Considered as an excellent System to cure even the almost dreadful diseases, which have been remained, unconquerred so far even by modern therapy, these Remedies are harmless, Cheap, limited and quick in action being Prepared from vegetable kingdom, they are quite different from Homoeopathy in Principle and law of cure.

They were invented by Dr. Count Ceasar Mattei of Italy (Bologna) in the latter part of eighteenth Century of the Principle of COMPLEXA - COMPLEXIS - CURENTUR.

Before it, Homoeopathy look its origing in the latter part of Seventeenth Century by Dr. Samuel Hahnemann of west Germany of the Principle of SIMILIA - SIMILIBUS - CURENTUR.

It is undoubtedly true that every system of treatment has its own significance in the pioneer field of medical Science for the restoration of the health of the patients.

Our Clinical records of Electro Homoeopathy absolutely prove that Electro Homoeopathic Remedies have the Capacity to cure all types of diseases whether bacterial, parasitic, or mixed in origin.

Electro Homoeopathic medicine are prepared from a Scientific process known as COHOBATION Through which 'Od force' of the medicinal plants are derived in the form of 'Spigaric essence' this simple and unique system does not require hard labour, More over, this system does not require Various laboratory tested or second medical opinion being firm in principle. the E.H. medicines are indicated after thorough study of the temperaments of the patients as well as positive or negative diseases.

The chart of Electro Homoeopathic Remedies conclusively prove its simplicity and limitation of Remedies.

As Various researches are being carried out by the old and new School of Electro Homoeopathy, it is hoped that this new system of treatment shell be attracted by public in the best interest of the health.

Inview of the facts enumerated above, Electro Homoeopathy needs thorough protection, and encouragement by our Govt., and early recognition in the best interest of the public health. - Dr. B.R. Gyal

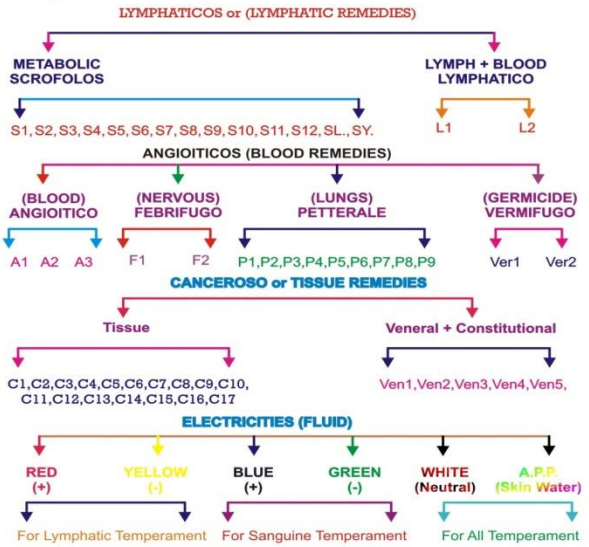

बोर्ड की सेमेस्टर परीक्षायें 26 दिसम्बर से

F.M.E.H. की सेमेस्टर तथा **A.C.E.H.** की परीक्षा आगामी 26 दिसम्बर, 2017 से प्रस्तावित हैं। **F.M.E.H.** एवं **A.C.E.H.** अभयर्थियों के प्रवेश पत्र उनके परीक्षा केन्द्रों को भेजे जा चुके हैं सम्बंधित छात्र अपने–अपने परीक्षा केन्द्रो से सम्पर्क कर प्रवेशपत्र प्राप्त कर लें।

यह जानकारी बोर्ड के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने गज़ट को एक भेंट में दी। परीक्षा कार्यक्रम इस प्रकार है :–

BOARD OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINE,U.P.

8-Lal Bagh, Kamla Sharma Marg, Lucknow-226001 E-mail registrarbehmup@gmail.com

PROGRAMME FOR EXAMINATION December 2017

Name of the course	26 th December, 2017 Tuesday	27 th December, 2017 Wednesday	28 th December, 2017 Thursday	29 th December, 2017 Friday
F.M.E.H. 1st. Semester	Anatomy & Physiology	Pharmacy &Philosophy	XX	XX
F.M.E.H. 2nd. Semester	Pathology	Hygiene & Health	Environmental Science	XX
F.M.E.H. 3rd. Semester	Opthalmology including E.N.T.	M.Jurisprudence & Toxicology	Dietetics	XX
F.M.E.H. Final Semester	Obstetrics & Gynaecology	Materia Medica	Practice of Medicine	XX
A.C.E.H.	Anatomy & Physiology	Pharmacy- Philosophy & Materia Medica	Pathology-Hygiene and M.Jurisprudence	Midwifery Gynics, Opthalmology & Practice of Med.

Timing → 8:00 A.M.to 11:00 A.M.

Ateeq Ahmad
Examination Incharge

कहीं दंश तो ..... दूसरे पेज से आगे

बाज़ार में हैं, चिकित्सकों के पास विकल्प उपलब्ध हैं कि वह अपने अनुसार पुस्तकों का चयन कर सकते हैं। यद्यपि 2003 से 2010 तक के समय में जो शान्ति रही धीरे धीरे उसका प्रभाव अब समाप्त होने लगा है कुछ नये और उदीयमान लेखकों की पुस्तकें उपलब्ध है जो सामायिक और विषयवस्तु पर पहले से अधिक स्पष्ट है यह सारी बाते इलेक्ट्रो होम्योपैथी की विकास की दस्तान स्वयं कह रहे है। अब इन 7 सालों 10–17 तक के समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत परिवर्तन आया है चिकित्सक पहले से ज्यादा अब जागरूक है और रोगी को स्पष्ट रूप से यह बताने में सफल भी हो रहे है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी विधा कितनी प्रभावी और लाभकारी है इन्हीं सब कार्यो को देखते हुए भारत सरकार ने भी अब यह मन बना ही लिया है कि किस भी तरह से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नियमितीकरण कर दिया जाये जिससे कि देश के लाखो इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों की दिशा तय हो ।

हम सब उस दिन के लिए उत्साहित है जब सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा के लिए कोई कानून या किसी ऐसी नीति का निर्धारण करेगी जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास और भी तेजी से हो सके ऐसा नहीं है कि अभी विकास नहीं हो रहा है एक जन मान्यता है कि जिस विधा पर सरकारी मुहर लगी होती है उस पर लोगो का भरोसा ज्यादा होता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी से करोड़ो रोगी ठीक हुए होंगे परन्तु सरकारी मान्यता के अभाव में हमारे चिकित्सकों के इस कार्य का कोई वास्तविक मूल्यांकन नहीं हो सका । कैंसर और एडस जैसी गम्भीर बीमारियों पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का अच्छा प्रभाव देखा गया है परन्तु सरकारी व्यवस्था न होने के कारण आम रोगी इलेक्ट्रो होम्योपैथ के पास आने से घबड़ता है और जो आता है ठीक होता है वह गुणगान भी करता है। हमारे कायो का मूल्यांकन नही होने का दंश हर चिकित्सक को पीड़ित करता है और साथ साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों की गुणवत्ता और योग्यता पर दम्भ भी होता है। परन्तु अब समय आ चुका है जब हम सब दंश और दम्भ की दुनिया से बाहर निकल कर वास्तविक दुनिया में विचरण करें। हमारे चिकित्सक भी यही चाहते है कि वर्षो की उपेक्षा समाप्त हो और भारत सरकार इस मामलों को शीघ्र से शीघ्र निर्णित कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वह स्थान प्रदान करे जिसकी वह प्रबल दावेदार है। इसके साथ साथ जन सामान्य को भी असाध्य रोगों में सरकारी सेवाओं के माध्यम से इस पद्धति का लाभ मिले।

बायें से दायें क्रमशः चेयरमैन डा0 एम0एच0 इदरीसी, रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद, प्राचार्य डा0 आर0 के शर्मा एवं महा सचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई छाया गज़ट

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का प्रभाव बढ़ रहा है

समाज में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां अपना प्रभाव डाल रही हैं और धीरे-धीरे लोगों में यह समझ भी आने लगी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी-होम्योपैथी से भिन्न चिकित्सा पद्धति है।

यह विचार मसीह-उल-हिन्द डा० नन्दलाल सिन्हा के जयन्ती समारोह पर बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ०प्र० द्वारा आयोजित सप्ताह के समापन पर डा० एम० एच० इदरीसी चेयरमैन बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ०प्र० द्वारा व्यक्त किये गये। डा० इदरीसी ने बताया कि आज से ४०-४५ साल पूर्व जब कैंसर को बहुत ही ज़्यादा भयावह और घातक माना जाता था उस समय डा० सिन्हा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा विधा से कैंसर पर नियन्त्रण का दावा किया था और जो रोगी उनके पास आते थे वे लाभान्वित भी होते थे। धीरे-धीरे लोगों का भरोसा इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर होने लगा परन्तु बहुत दिनों तक आम जन यही मानता था कि यह विधा सिर्फ़ गम्भीर और असाध्य रोगों पर ही लाभ करती है परन्तु अब लोगों का भ्रम दूर हो चुका है और लोग जब चाहते हैं इस विधा को प्रयोग में ले लेते हैं।

कार्यक्रम का प्रारम्भ डा० सिन्हा के चित्र पर माल्यार्पण से हुआ तत्पश्चात बोर्ड के रजिस्ट्रार डा० अतीक अहमद ने डा० सिन्हा के जीवन और कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि तब और आज की इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बड़ा अन्तर आ चुका है अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी सर्वसुलभ और लोकप्रिय हो चुकी है इस विधा की औषधियां तीव्र प्रभावी होने के साथ-साथ गुणकारी भी हैं जिसके कारण हर आयु वर्ग के लोग इसका सेवन कर लेते हैं, डा० अतीक ने बताया कि अपने जीवन काल में मुझे भी एक बार डा० सिन्हा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था उनके सरल और सौम्य व्यक्तित्व से हर व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। चिकित्सा के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी उनका दख़ल था वह शेरो-शायरी भी करते थे, नज़्में भी लिखते थे, इसी प्रभाव के चलते उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की किताब मन्ज़ूम में लिखी है। उर्दू के साथ साथ डा० सिन्हा को अरबी और फ़ारसी पर भी मज़बूत पकड़ थी। ''मस्त मौला'' स्वभाव के डा० सिन्हा सशरीर हमारे बीच तो नहीं हैं लेकिन उनकी यादें आज भी हमें तरोताज़ा कर देती हैं। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बोर्ड के प्रवक्ता डा० प्रमोद शंकर बाजपेयी ने कहा कि प्रतिस्पर्धा के कारण ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी में निखार आया है, जो लोग कल तक इस विधा की उपेक्षा करते थे, वही आज इस विधा को स्वीकार कर रहे हैं यह परिवर्तन आसानी से नहीं आया है इसके पीछे हमारे चिकित्सकों की कड़ी मेहनत और अथक प्रयासों का परिणाम है। जहां तक डा० नन्दलाल सिन्हा की बात है वह हमारे प्रेरणास्रोत्र हैं और वर्षों तक बने रहेंगे, आने वाली पीढ़ी और वर्तमान पीढ़ी डा० सिन्हा के कर्मयोग के सिद्धान्त पर आगे बढ़ते हुए इस विधा को आगे ले जायेंगे ऐसी हम अपेक्षा करते हैं।

डा० बाजपेयी ने कहा कि समय बहुत तेज़ी के साथ बदल रहा है, कालान्तर में जो कुछ भी हुआ उससे यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को ज़्यादा लाभ नहीं हुआ तो हानि भी नहीं हुई जो भी घटनायें घटीं उससे समाज में यह संदेश गया कि अन्य विधाओं की तरह ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी भी एक विधा है जिसके लिए संघर्ष चल रहा है परन्तु अब वह अवसर आ चुका है जब हम संघर्षों से बाहर निकल कर एक नई दिशा की तरफ़ बढ़ रहे हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जिस नियमितीकरण के लिए हम और हमारे साथी वर्षों से संघर्षरत रहे हैं अब वह परिणाम की तरफ़ अग्रसर है।

डा० सिन्हा की संघर्ष क्षमता हमें यह प्रेरणा देती है कि परिस्थितियां कुछ भी हों परन्तु कार्य करते रहो और कार्य करते हुए अपना एक अलग स्थान बनाओ, क्योंकि कार्य ही वह हथियार है जो बड़े से बड़े उद्देश्य की पूर्ति कर देता है। हम सब आज के दिन यह संकल्प लें कि कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सम्मान जनक स्थान तक ले जायेंगे।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डा० मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि आज का दिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के गौरव का दिन है यद्यपि डा० सिन्हा के समकालीन बहुत सारे चिकित्सक जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यवसाय करते थे उन्होनें भी इस विधा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण कार्य किया परन्तु डा० सिन्हा न सिर्फ़ चिकित्सा कार्य करते थे अपितु लेखन के क्षेत्र में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने हिन्दी उर्दू भाषा में इलेक्ट्रो होम्योपैथी साहित्य को लिखकर सर्वसुलभ कराया, उनके इस महान कार्य के लिए हम शत-शत नमन करते हैं। यद्यपि हमने कभी डा० सिन्हा को देखा नहीं अपने अग्रजों से जो कुछ भी सुना है वह हमें श्रद्धावनत करता है हमारे अग्रज डा० एम० एच० इदरीसी जी ने आज जो कुछ भी डा० सिन्हा के बारे में बताया वह हमें अन्दर तक उद्वेलित करता है और इस बात के लिए प्रेरित करता है कि आज से ४०-४५ वर्ष पूर्व जिस साहस के साथ डा० नन्द लाल सिन्हा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रचार और प्रसार किया वह हमें प्रेरित करता है और प्रेरित करता रहेगा।

आज के दिन हम यह संकल्प लेते हैं कि प्रदेश में हर चिकित्सक डा० सिन्हा के कार्यों को अपना आदर्श माने और उन्हीं आदर्शों पर आगे बढ़ते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य करें। कार्यक्रम में उपस्थित डा० प्रमोद सिहं व श्री वसीम इदरीसी ने डा० सिन्हा के चित्र पर पुष्प चढ़ाये और उनके बताये हुए रास्ते पर चलने की इच्छा व्यक्त की।

डा० सिन्हा जयन्ती के कार्यक्रम बोर्ड द्वारा सम्बद्ध संस्थानों व अध्ययन केन्द्रों में भी धूम-धाम से आयोजित किये गये, महाराजगंज के धनपत लाल मेमोरियल मेडिकल स्टडी सेन्टर ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी में डा० सिन्हा जयन्ती के अवसर पर एक चित्र प्रर्दशनी लगायी गयी जिस पर डा० सिन्हा के जीवन से जुड़े चित्रों का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन स्टडी सेन्टर के संचालक डा०प्रिन्स श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

जनपद लखीमपुर खीरी में बोर्ड द्वारा सम्बद्ध माँ सरजू देवी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीट्यूट में डा० राकेश कुमार शर्मा द्वारा डा० सिन्हा जयन्ती का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया, कार्यक्रम में विद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए, जिन्होंने डा० सिन्हा के बारे में जाना और प्रेरणा ली।

क्रमांक 1 एवं 2 में — बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ०प्र० लखनऊ में आयोजित एक विशेष बैठक में उपस्थित सम्बद्ध संस्थानों/अध्ययन केन्द्रों के संचालकगण — छाया गज़ट